धार्मिक, सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय चेतना की पत्रिका
अंक : 74
आश्विन, 2064
अक्टूबर, 2007 ई0

सम्पादक-मण्डल
प्रो0 काशीनाथ मिश्र
महन्त उद्धवदासजी
डा0 श्रीरंजन सूरिदेव
आचार्य किशोर कुणाल

प्रधान सम्पादक
भवनाथ झा

महावीर मन्दिर प्रकाशन
के लिए
प्रो0 काशीनाथ मिश्र
द्वारा प्रकाशित
तथा
सर्चलाइट प्रेस में मुद्रित
पत्र-सम्पर्क:

धर्मायण,
पाणिनि-परिसर,
बुद्ध-मार्ग,
पटना-800001
दूरभाष – 0612-2207725
E-mail: mahavirmandir@sify.com

मूल्य : **दस रुपये**

मुण्डेश्वरी मन्दिर विशेषांक

विषय-सूची

हिन्दी प्रभाग

1. मुण्डेश्वरी भवानी : साहित्यिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि
– भवनाथ झा 2
2. मुण्डेश्वरी भवानी : देश का प्राचीनतम मन्दिर
– आचार्य किशोर कुणाल 12
3. मुण्डेश्वरी शिलालेख 18
4. शिलालेख का अनुवाद 19
6. मन्दिर का अवशिष्ट भाग एवं पुनर्निर्माण की भित्ति-योजना का प्रारूप 20
7. मुण्डेश्वरी भवानी मन्दिर –डा0 प्रकाश चरण प्रकाश 21
8. श्री मुण्डेश्वरी मन्दिर-अतीत और वर्तमान
– दिवाकर पाठक 29
9. प्राचीनतम शक्तिपीठ मुण्डेश्वरी
–चक्रवर्ती श्री रामाधीन चतुर्वेदी
37

अंग्रेजी प्रभाग

1. Mundeshwari Inscription of Udayasena
-Dr. R. D. Banarji 40
2. The Mundeshwari Inscription of the Time of Udayasen: The Year 30. -N. G. Majumadar. 43
3. Temple of Mundeshwari in Sahabad.
-Krishna chandra Panigrahi 52
4. Mundeshwari
-P. C. Ray choudhary 60
4. Extract From District Gazetteer Sahabad 66
5. Extract From Antiquarian Remains in Bihar 69
6. A Note On Mundeshwari Temple 73

चित्र-संग्रह

1. मूर्तियों के चित्र 77
2. लघु प्रस्तर-लेखों की नेत्र-प्रति 80

b b b b b b b b b b b b b b b b b b b b b b b b b b b b b b b b b b b b b b b b b b b b b

सम्पादकीय

मुण्डेश्वरी भवानी : साहित्यिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

■ *भवनाथ झा*

b b b b b b b b b b b b b b b b b b b b b b b b b b b b b b b b b b b b b b b b b b b b b

अक्सर इतिहासकारों ने कहा है कि ईसा पूर्व भारत का इतिहास बिहार का इतिहास रहा है। यह बिहार के लिए गौरव की बात है कि अतीत में सबसे प्राचीन गणतन्त्र वैशाली में और ठोस साक्ष्यों से ज्ञात इतिहास में सुदृढ़ राजतन्त्र मगध में स्थापित हुआ, जिसकी राजधानी यही पाटलिपुत्र नगरी रही। इस पाटलिपुत्र को लगभग एक सहस्राब्दी तक भारत के अधिकांश भाग की राजधानी रहने का गौरव प्राप्त है। निश्चित रूप से इस दीर्घ अवधि में इस मगध क्षेत्र का राजनैतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं सामाजिक विकास हुआ।

इसी विकास की कड़ी में एक महत्त्वपूर्ण पुष्प है- भभुआ के निकट कैमूर पहाड़ी पर स्थित मुण्डेश्वरी भवानी स्थान। यह क्षेत्र वाल्मीकीय रामायण में 'करूष' के नाम से प्रसिद्ध है। बालकाण्ड में विश्वामित्र श्रीराम को इसका परिचय देते हुए कहते हैं-

एतौ जनपदौ स्फीतौ पूर्वमास्तां नरोत्तम।
मलदाश्च करूषाश्च देवनिर्माणनिर्मितौ।।17।।

अर्थात् पहले कभी यहाँ देवताओं के बसाए हुए दो बड़े नामी देश थे – मलद और करूष।।17।।

महाभारत में करूष देश के राजा का नाम वक्र आया है, जिसे जरासंध का सामन्त बताया गया है। इसने शिशुपाल का साथ दिया था।

तमेव च महाराज शिष्यवत् समुपस्थितः।
वक्रः करूषाधिपतिर्मायायोधी महाबलः॥ सभा 14-11

शाक्त-ग्रन्थों में इस मण्डलेश्वर-पीठ को शक्ति-पीठ के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। वृहन्नील के चतुर्थ पटल तथा प्राणतोषिणी-तन्त्र में माकोट स्थान में मुण्डकेश्वरी शिवा का उल्लेख शक्ति-पीठ के रूप में किया गया है। साथ ही, यहाँ मण्डलेश्वर शिव की भी चर्चा आयी है।

माकोटास्ये महाकोटः शिवा च मुण्डकेश्वरी।
मण्डलेश्वरपीठे च शङ्करः खाण्डवी शिवा।।

यहाँ 'माकोटास्ये' के पाठान्तर में 'माकोटाख्ये' और 'माकोटे च' भी मिलते हैं। ये सभी शब्द महाकोट शब्द के अपभ्रंश प्रतीत होते हैं। कैमूर की पहाड़ियों पर आज भी जितनी गुफाएँ हैं उन्हें 'कोट' कहा जाता है।

मुण्डेश्वरी भवानी मन्दिर का इतिहास साक्ष्यों के रहते हुए भी अन्धकार में है। यहाँ एक शिलालेख उपलब्ध है, जिसका महत्त्वपूर्ण अंश पढ़ लिया गया है, फिर भी इस शिलालेख का काल-निर्धारण आज तक नहीं हो पाया है। यह 349 ई० से लेकर 636 ई० के बीच झूल रहा है।

इस मन्दिर का सर्वप्रथम निरीक्षण आर० एन० मार्टिन द्वारा 1833 ई० के आसपास किया गया। डी० आर० पाटिल के अनुसार बुचानन को इस पहाड़ी पर पुरावशेषों की सूचना थी। इसके अतिरिक्त कनिंघम के रिपोर्ट में भी इसका उल्लेख उपलब्ध नहीं है। इस स्थल से एक शिलालेख दो टुकड़ों में उपलब्ध हुआ, जिनमें एक टुकड़ा 1882 में मिला था तथा दूसरा टुकड़ा 1902-1904 के बीच मिला, जब ब्लॉख के नेतृत्व में पुरातत्त्वविद् के द्वारा पुरावशेषों को हटाया गया था। 18 पंक्ति के इस शिलालेख का सम्पादन डा० राखालदास बनर्जी ने